पहाड़ से ऊँचा आदमी

12

संसार में जो उपलब्धियाँ हैं उन सबके पीछे एक ही चीज़ दिखाई देती है, वह है पुरुषार्थ, परिश्रम, मेहनत। कर्मवीर बंजर में स्रोता बहा देते हैं और पहाड़ का सीना चीरकर मार्ग बदल देते हैं। इस पाठ के नायक दशरथ माँझी के विषय में जानें, जिन्होंने तीन सौ साठ फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा पहाड़ काटने का बीड़ा उठाया और काट कर दम लिया। सच है, इरादा मज़बूत हो तो अवनि क्या अंबर के सुख मिल सकते हैं। पाठ में दिशाहीन भटकने की अपेक्षा कर्मठ हो प्रयास करने को महत्त्व दिया गया है।

तीन सौ साठ फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा पहाड़ काटने के लिए कितना वक़्त लग सकता है? निश्चित ही टैक्नोलॉजी के इस युग में इस सवाल का जवाब इस बात पर निर्भर करेगा कि आप पहाड़ का **सीना**[1] चीरने के लिए किस मशीन का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन अगर यह पूछा जाए कि इसी काम को एक ही **शख़्स**[2] को **अंजाम**[3] देना हो तो कितना वक्त लगेगा?

शायद यह चकरा देनेवाला सवाल होगा लेकिन बिहार के गया ज़िले के गेलौर गाँव में एक मज़दूर परिवार में जन्मे एक शख़्स ने इसका जवाब अपनी बाजुओं और अपनी मेहनत से दिया। पहाड़ को हिला देनेवाले दशरथ माँझी ने राजधानी दिल्ली में 2007 में अंतिम साँस ली। उनका जन्म 1934 में हुआ था।

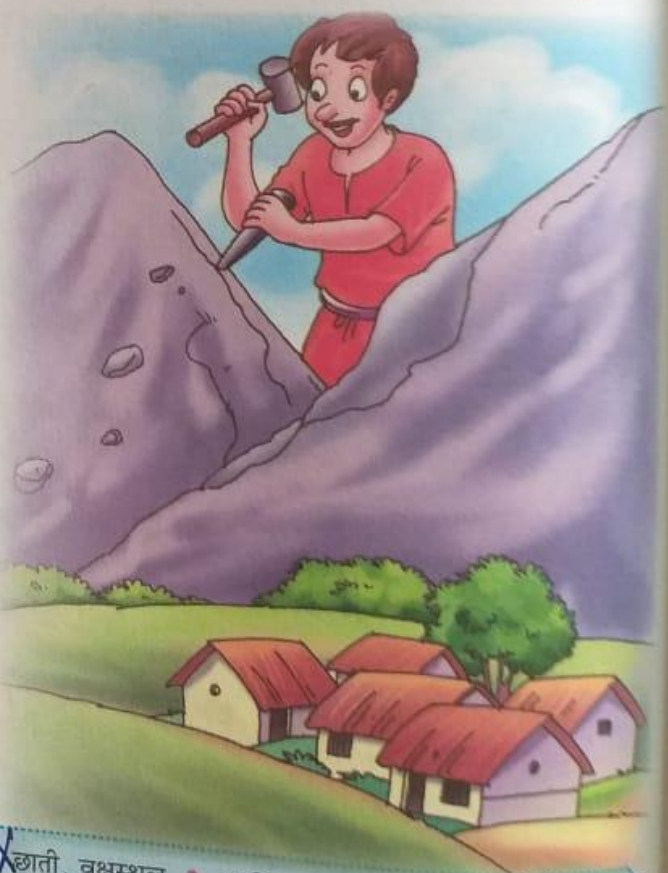

वर्ष 1966 की किसी **अलसुबह**[4] जब छेनी हथौड़ा लेकर दशरथ माँझी अपने गाँव के पास स्थित पहाड़ के पास पहुँचे तो बहुत कम लोगों को इस बात का पता था कि इस शख़्स ने अपने दिल में क्या ठान लिया है। मज़दूरी और कभी-कभार इधर-उधर काम करनेवाले दशरथ माँझी ने जब पहाड़ पर छेनी-हथौड़ा चलाना शुरू किया तो आने-जाने वाले **राहगीरों**[5] के लिए ही नहीं, गाँव के लोगों के लिए भी वह एक हँसी के पात्र बन गए थे।

जीवन संगिनी फ़ागुनी देवी का समय पर इलाज न करा पाने से उसे खो चुके दशरथ माँझी को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। **धुन**[6] के पक्के दशरथ की अथक मेहनत बाईस साल

शब्दार्थ 1. छाती, वक्षस्थल, 2. व्यक्ति, 3. पूरा करना, 4. बहुत सुबह, 5. पथिक, यात्रियों, 6. लगन।

बाद तब रंग लाई जब उस पहाड़ से एक रास्ता दूसरे गाँव तक निकल आया।

आखिर ऐसी क्या बात हुई कि दशरथ को पहाड़ चीरने की धुन सवार हुई। दरअसल[7] पहाड़ को जब तक चीरा नहीं गया था, तब तक दशरथ के गाँव से सबसे नज़दीकी वजीरगंज अस्पताल 80 किलोमीटर पड़ता था। दशरथ की पत्नी की तबीयत खराब होने पर उसे वहाँ ले जाने के दौरान ही बीच रास्ते में उसने दम तोड़ दिया था। यदि पहाड़ से कोई रास्ता होता तो वह अपनी पत्नी को वक़्त पर अस्पताल ले जाता और उसका इलाज करा पाता।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की एक कविता है "दुख तुम्हें क्या तोड़ेगा तुम दुख को तोड़ दो। अपनी आँखें औरों के सपनों से जोड़ दो।"

ज़िंदगी का तीसवाँ वसंत पार कर चुके दशरथ माँझी ने शेष गाँव के निवासियों के मन में दबी इस छोटी-सी **हसरत**[8] को अपनी ज़िंदगी का मिशन बना डाला और अपनी पत्नी की असामान्य मौत से उपजे प्रचंड दुख को एक नई संकल्प शक्ति में **तबदील कर दिया**[9]। पाँच-छह साल तक दशरथ अकेले ही मेहनत करते रहे, धीरे-धीरे और लोग भी जुड़ते चले गए। वहाँ एक दानपात्र भी रखा गया था जिसमें लोग चंदा डाल देते थे। कई लोग अपने घर से अनाज़ भी देते थे।

आज की तारीख में आप कह सकते हैं कि गेलौर से वजीरपुर जाने की अस्सी किलोमीटर की दूरी को 13 किलोमीटर लाने वाला यह रास्ता एक **श्रमिक**[10] के प्यार की निशानी है। एक अंग्रेज़ी पत्रकार ने लिखा : 'पूअरमैंस ताजमहल।'

कुछ साल पहले एक पत्रकार उनसे मिलने गया, तब एक **फक्कड़**[11] कबीरपंथी की तरह यायावरी कर रहे दशरथ माँझी ने उन्हें अपनी एक प्रिय कहानी सुनाई थी जो उस चिड़िया के बारे में थी जिसका घोंसला समुद्र बहाकर ले गया था। कहानी उस चिड़िया की **प्रचंड**[12] **जिजीविषा**[13] और **संकल्प**[14] को बयाँ कर रही थी जिस में समुद्र द्वारा घोंसला न लौटाने पर चिड़िया ने अकेले ही समंदर को सुखा देने का संकल्प लिया। शुरुआत में उसे पागल करार देने वाली बाकी चिड़ियाँ भी उसके साथ जुड़ गईं और फिर विष्णु का वाहन गरुड़ पक्षी भी इन कोशिशों का हिस्सा बन गया।

शब्दार्थ
7. वास्तव में, 8. कामना, 9. बदल दिया, 10. मज़दूर, 11. निश्चिंत, लापरवाह, 12. अति तीव्र, 13. जीने की इच्छा, 14. इरादा।

फिर बीच-बचाव[15] करने के लिए खुद विष्णु को आना पड़ा जिन्होंने समुद्र को धमकाया कि अगर उसने चिड़िया का घोंसला नहीं लौटाया तो पलभर में उसे सुखा दिया जाएगा। पत्रकार ने जब उससे पूछा कि कहानी की चिड़िया क्या आप ही हैं। जवाब में आँखों में शरारत भरी मुसकान लिए दशरथ माँझी ने बात टाल दी थी।

पिछले कुछ सालों से दशरथ माँझी कबीरपंथी साधु बन गए थे और यायावर बने हुए थे लेकिन कबीर को स्वीकारना महज़[16] ऊपरी नहीं था। उनके विचारों में भी कबीर जैसी-प्रखरता[17] थी। गरीब और मेहनतकश का ईश्वर पूजा में उलझे रहना और तमाम अंधश्रद्धाओं का शिकार होना उन्हें कचोटता[18] था। वे कहते थे कि ज़िंदगी भर फाकाकशी[19] करते रहे आदमी की मौत के बाद मृत्युभोज में अच्छे-अच्छे पकवान खिलाए जाते हैं। इसके लिए लोग कर्जा क्यों लेते हैं?

दशरथ माँझी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन क्या वे हमें उन मिथकीय[20] पात्रों की याद दिलाते प्रतीत नहीं होते, जैसे पात्र हमें पुराणों में मिलते हैं फिर वह चाहे प्रोमेथियस हो या भगीरथ। ऐसी शख्सियतें, जो मनुष्य की उद्दाम जिजीविषा को प्रतिबिंबित[21] कर रही होती हैं और अपनी कोशिशों से प्रकृति की दानव शक्तियों और इनसानियत के दुश्मनों से लड़ रही होती हैं।

अपने जीवन का फलसफा[22] बयान करते हुए उन्होंने एक पत्रकार को शायद इसलिए बताया था कि "पहाड़ मुझे उतना ऊँचा कभी नहीं लगा जितना लोग बताते हैं। मनुष्य से ज़्यादा ऊँचा कोई नहीं होता।"

—सुभाष गाताड़े

शब्दार्थ 15. मध्यस्थता, 16. केवल, सिर्फ़, 17. तीक्ष्णता, 18. रह-रहकर मन में पीड़ा होना, 19. भूखों मरना, 20. मायावी, 21. प्रतिबिंब पड़ना, 22. ज्ञान, दर्शन।

अभ्यास

पाठ-चिंतन

1. मौखिक

Speaking Skills
- recall
- reasoning
- description
- appreciation

Values :
- hard work

क. दशरथ माँझी कौन थे? उन्होंने क्या ठान लिया था?

ख. वे गाँव वालों की हँसी के पात्र क्यों बन गए थे?

ग. दशरथ के गाँव से वजीरगंज अस्पताल कितनी दूर था?

घ. दशरथ की मेहनत कब और कैसे रंग लाई?

ङ. 'समुद्र को सुखाने की इच्छा रखने वाली चिड़िया के लिए विष्णु को आना पड़ा' इससे क्या सीख मिलती है?

पाठ - 12
पहाड़ से ऊँचा आदमी

कक्षा - सातवीं

नोट - पाठ के जिन शब्दार्थों पर X का निशान लगा है वे नहीं लिखने हैं।

प्रश्नोत्तर

प्र० 1 दशरथ माँझी कौन थे? उन्होंने क्या ठान लिया

उ० दशरथ माँझी बिहार राज्य के, गया जिले के, गेलौर गाँव के निवासी थे। उन्होंने अपने गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिए पहाड़ काटकर रास्ता बनाने का इरादा कर लिया था।

प्र० 2 दशरथ के गाँव से वजीरगंज अस्पताल कितनी दूर था?

उ० दशरथ माँझी के गाँव से वजीरगंज अस्पताल 80 किलोमीटर दूर था।

प्र० 3 दशरथ माँझी ने पहाड़ को चीरने का निर्णय क्यों लिया?

उ० दशरथ माँझी की पत्नी की तबीयत खराब होने पर, वजीरगंज अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई थी। माँझी ने सोचा यदि पहाड़ से कोई रास्ता होता तो वे समय रहते अस्पताल पहुंच जाते। इसी कारण उन्होंने पहाड़ चीरने का निर्णय लिया।

प्र० 4 पहाड़ चीरकर रास्ता कितना छोटा हो गया था? अंग्रेज पत्रकार ने उसे 'गरीब का ताजमहल' क्यों कहा

उ० गेलौर गाँव से वजीरगंज की 80 किलोमीटर की दूरी केवल 13 किलोमीटर ही रह गई। यह रास्ता

एक गरीब मज़दूर के प्यार की निशानी है इसलिए अंग्रेज़ पत्रकार ने उसे 'गरीब का ताजमहल' कहा।

प्र० 5 'पहाड़ से ऊँचा आदमी' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उ० दशरथ माँझी का मानना था कि मनुष्य के संकल्प (इरादे) से बड़ा कुछ नहीं होता। इंसान यदि चाहे तो असंभव दिखने वाले कार्य को भी कर सकता है। यह बात इस पाठ के प्रमुख पात्र दशरथ माँझी पर बिलकुल सही सिद्ध होती है। अतः यह शीर्षक सार्थक है।